International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 (www.ijsrset.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRSET

Study of Social Consciousness of Students of Higher Secondary Level Towards Environment and Forest Conservation Programs

(उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की पर्यावरण व वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक चेतना का अध्ययन)

Kusum Devi,
Research Scholar, Education Department
Nehru Gram Bharati Deemed to be University Prayagraj, Uttar Pradesh, India

Article Info
Volume 8, Issue 4
Page Number: 40-48

Publication Issue :
July-August-2021

Article History
Accepted : 02 July 2021
Published: 05 July 2021

सार :

पर्यावरण मानव जीवन का अभिन्न अंग है जिसके बिना मानव जीवन की कल्पना सम्भव नहीं है। जिस प्रकार से मानव के किसी अंग को कार्य न करने से असहनीय दर्द होता है उसी प्रकार पर्यावरण के न रहने से होगा, इसीलिए पर्यावरण की रक्षा में लापरवाही यानी अपने विनाश को आमंत्रित करना है। हम अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण के संसाधनों का खुब प्रयोग करते हैं परंतु इसके लिए सुरक्षित उपभोग के विषय में नहीं सोचते हैं पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामाजिक चेतना विकसित करने के लिए दो दशकों से प्रयास किए जा रहे हैं पर्यावरण ने वैज्ञानिकों, राष्ट्र निर्माताओं तथा विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा है। अब आम आदमी भी पर्यावरण को लेकर सोचने समझने लगा है। अकाल, सूखा, वायु, जल, ईंधन की कमी, रासायनिक प्रदूषण, पराबैगनी किरणे, ग्लोबल वार्मिंग, प्राकृतिक संसाधनों, वन्य जीव जंतुओं का विनाश, वनस्पतियों तथा जीव जंतुओं को खतरा आदि ऐसी प्रमुख समस्याएं हैं जो हमें सतर्क करती हैं। पर्यावरण की समस्याओं को हल करना आवश्यक है यदि हमारे द्वारा इन पर निर्णय नहीं लिया गया तो यह भावी पीढ़ी के रहने योग्य नहीं होगा। पर्यावरण और विकास पर बने विश्व आयोग 1987 में 'हमारा संयुक्त भविष्य' शीर्षक में अपनी रिपोर्ट में कहा कि अक्षय विकास की अवधारणा को अपनाना होगा और कहा कि वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं से समझौता किए बिना पूरा करना चाहिए। सभी प्रकार के विकास की क्रियाएं पर्यावरण क्षरण से जुड़ी होती हैं हमें इसमे संतुलन स्थापित करना होगा। प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन हेतु प्रयागराज जिले के उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के 8 विद्यालयों का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र हेतु अध्ययन में केवल उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 12 के छात्र छात्राओं को ही सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में 240 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया है जिसमें 120 छात्र और 120 छात्राएं सम्मिलित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शोधार्थिनी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

की- वर्ड : पर्यावरण, वन संरक्षण कार्यक्रम, उच्च माध्यमिक स्तर, सामाजिक चेतना आदि।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

प्रस्तावना :

पर्यावरण मानव जीवन का अभिन्न अंग है जिसके बिना मानव जीवन की कल्पना सम्भव नहीं है। जिस प्रकार से मानव के किसी अंग को कार्य न करने से असहनीय दर्द होता है उसी प्रकार पर्यावरण के न रहने से होगा, इसीलिए पर्यावरण की रक्षा में लापरवाही यानी अपने विनाश को आमंत्रित करना है। हम अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण के संसाधनों का खुब प्रयोग करते हैं परंतु इसके लिए सुरक्षित उपभोंग के विषय में नहीं सोचते हैं। पर्यावरण के संसाधनों में बहुत संसाधन ऐसे होते हैं जिनका प्रयोग केवल एक बार ही किया जा सकता है, जो समाप्त हो सकते हैं। हमें कोयला, पेट्रोल, डीजल, गैस आदि का उपयोग करते समय यह ध्यान देना चाहिए की इनका नवीनीकृत नहीं किया जा सकता है। मानव कि सभी क्रियाएं पर्यावरण को प्रभावित करती हैं जनसंख्या वृद्धि, वनों की कटाई, जंगलों की कटाई, विज्ञान के क्षेत्र में खोज तथा तीव्र गति से सड़क, परिवहन, यातायात के साधनों का विकास आदि पर्यावरण को भारी नुकसान पहुंचाते हैं।

पर्यावरण के विनाश से मानव का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है हमें यह सोचना चाहिए कि मानव जाति का अस्तित्व पर्यावरण संरक्षण एवं सुधार से ही है। भूमि, जल, वायु आदि प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए ताकि भावी पीढ़ी के लिए भी स्वच्छ पर्यावरण मिल सके। पर्यावरण के बिना जीवन को समझना कठिन है आज पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को हम नकार करके अपने आप को धोखा दे रहे हैं। भूमि, जल, वायु, जनसंख्या में वृद्धि, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण आदि और पर्यावरण की मुख्य समस्याएं हैं जिनसे निपटने के लिए मानव समुदाय को आगे बढ़कर कार्य करना होगा। आज हम इनके विकास में जितना योगदान दे रहे हैं कल वही भावी पीढ़ी के विनाश में अपना योगदान देंगे।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामाजिक चेतना विकसित करने के लिए दो दशकों से प्रयास किए जा रहे हैं पर्यावरण ने वैज्ञानिकों, राष्ट्र निर्माताओं तथा विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा है। अब आम आदमी भी पर्यावरण को लेकर सोचने समझने लगा है। अकाल, सूखा, वायु, जल, ईंधन की कमी, रासायनिक प्रदूषण, पराबैगनी किरणे, ग्लोबल वार्मिंग, प्राकृतिक संसाधनों, वन्य जीव जंतुओं का विनाश, वनस्पतियों तथा जीव जंतुओं को खतरा आदि ऐसी प्रमुख समस्याएं हैं जो हमें सतर्क करती हैं। पर्यावरण की समस्याओं को हल करना आवश्यक है यदि हमारे द्वारा इन पर निर्णय नहीं लिया गया तो यह भावी पीढ़ी के रहने योग्य नहीं होगा। पर्यावरण और विकास पर बने विश्व आयोग 1987 में 'हमारा संयुक्त भविष्य' शीर्षक में अपनी रिपोर्ट में कहा कि अक्षय विकास की अवधारणा को अपनाना होगा और कहा कि वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं से समझौता किए बिना पूरा करना चाहिए। सभी प्रकार के विकास की क्रियाएं पर्यावरण क्षरण से जुड़ी होती हैं हमें इसमे संतुलन स्थापित करना होगा।

भारत में पर्यावरण चेतना के महत्व को 1970 ईस्वी के दशक में संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1972 ईस्वी में स्टॉकहोम में पर्यावरण पर सम्मेलन आयोजित करवाने के बाद समझ में आया, भारत द्वारा अब तक अनेकों कार्यक्रमों का आयोजन किए गए तथा पर्यावरण एवं वन मंत्रालय का गठन किया गया, 1986 ई. में पर्यावरण संरक्षण पर कानून भी लागू कर दिया गया। वन और वन्यजीव संरक्षण अधिनियम,1927, भारतीय वन अधिनियम और संशोधन 1984, 1972, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम नियम, 1973 और संशोधन 1991, 1980, वन संरक्षण अधिनियम, 1981 में जल,1882 सुगमता अधिनियम, 1897, भारतीय मत्स्य अधिनियम, 1956,नदी बोर्ड अधिनियम, 1970, व्यापारी शिपिंग अधिनियम, 1974, जल रोकथाम और प्रदूषण पर नियंत्रण अधिनियम, 1991, तटीय विनियमन क्षेत्र अधिसूचना, वायु रोकथाम और प्रदूषण का नियंत्रण अधिनियम और संशोधन अधिनियम 1987, 1981, वायु प्रदूषण

की रोकथाम और नियंत्रण अधिनियम 1982, परमाणु ऊर्जा अधिनियम 1987, वायु रोकथाम और प्रदूषण का नियंत्रण संशोधन अधिनियम 1988, आदि कार्यक्रमों को संचालित किया गया है।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना बढ़ने से पूरा विश्व नए नए उपायों की खोज में निकल पड़ा भारत की प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी ने स्टॉकहोम सम्मेलन में सम्मिलित होने वाली अकेली राष्ट्राध्यक्ष थी। श्रीमती इंदिरा गांधी ने यह संदेश दिया कि गरीबी सबसे अधिक प्रदूषण फैलाने का कार्य करती है और जब तक हम इसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रयोग द्वारा खत्म नहीं कर पाते हैं पर्यावरणीय समस्याओं से निकल पाना मुश्किल है। इसके लिए यू.एन.डी.पी. , विश्व बैंक तथा संयुक्त राष्ट्र की अन्य संस्थाएं कार्य कर रही है, नि:संदेह पर्यावरण और विकास की नीतियां एक दूसरे की पूरक होती है। माट्रियल सम्मेलन तथा मौसम परिवर्तनों पर सम्मेलनों और रियो डे जेनेरियो में जैव विविधता और जंगल पर स्वीकार की गए प्रस्ताव विकास और पर्यावरण सुरक्षा के महत्वपूर्ण निर्णय है।

आज भारत में वन्य जीवन की सुरक्षा के लिए वनों की कटाई के विरुद्ध सरकारी संस्थाओं के द्वारा कार्य किए जा रहे हैं। भारत सरकार द्वारा आयोजित वन संरक्षण कार्यक्रमों को भरपूर सहयोग मिल रहा है। भारत में 75 राष्ट्रीय उद्यान, 421 वन्य जीव अभ्यारण है। पर्यावरण को संतुलिन बनाये रखने के लिए हमें प्रत्येक पर्यावरणीय कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए प्रयास करना चाहिए । हमें पृथ्वी पर अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। मानव समुदाय में यह चेतना जागृत करना चाहिए कि वृक्षारोपण जैसा पुनीत कार्य कोई नहीं है वृक्ष को पुत्र के समान समझना चाहिए तथा उन्हें जीवन प्रदान करने के लिए जल, मिट्टी, हवा आदि की आवश्यकताओं की पूर्ति हमेशा करते रहना चाहिए। आज बढ़ती हुई आबादी के कारण वनों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए कृषि से संबंधित वृक्षारोपण को अपनाना होगा, ऐसी भूमि जो बंजर है उपजाऊ नहीं है खाली पड़ी हुई हैं उन पर वृक्षारोपण किए जायें ताकि मानव एवं जीव जंतु अपने-अपने लिए उपयोगी संसाधन को प्राप्त कर सकें।

अध्ययन का औचित्य:

पर्यावरण की जटिलताओं की जानकारी प्राप्त करना एक कठिन कार्य है पर्यावरण के संरक्षण के लिये सामाजिक चेतना का विकास करना तथा वन संरक्षण के लिए वन की उपयोगिता के विषय में समाज को जागरुक करना सामाजिक चेतना है। समाज और पर्यावरण एक दूसरे के पूरक हैं, हम कह सकते हैं कि एक सिक्के के दो पहलू हैं, एक बिना के दूसरा अधूरा है। प्राचीन काल से पृथ्वी पर होने वाले परिवर्तनों का कारण पर्यावरण में होने वाले व्यापक परिवर्तन को माना जाता रहा है। आज मानव आधुनिकता के बोझ तले दबता जा रहा है, एक दूसरे से आगे बढ़ने की प्रतिस्पर्धा और विकास की दौड़ में शामिल होकर पर्यावरण के महत्व को अनदेखा कर रहा है। यदि मानव पर्यावरण के महत्व, उपयोगिता और आवश्यकता को समझ, बूझ कर सुव्यवस्थित तरीके से उपयोग करें तो समाज में परिवर्तन अपने आप संभव है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थिनी ने उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों को पर्यावरणीय सामाजिक चेतना तथा वन संरक्षण में अपनी भूमिका का निर्वाह करने हेतु चुना है, जो शोध समस्या में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस शोध समस्या से निम्नलिखित प्रश्न बनते हैं कि आखिर कैसे --

* पर्यावरण छात्रों के जीवन को प्रभावित करता है।
* पर्यावरण समाज के लोगों के लिए आवश्यक है।

* पर्यावरणीय सामाजिक चेतना छात्रों में किस प्रकार पैदा की जा सकती है।

* उच्च माध्यमिक स्तर पर पर्यावरणीय सामाजिक चेतना हेतु कार्यक्रमों का संचालन किस प्रकार किया जाए जिससे छात्रों में पर्यावरण व वन संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता बढें और उसके महत्व को समझ सके।

समस्या कथन :

''उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक चेतना का अध्ययन ''

अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए है -

* उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में पर्यावरणीय सामाजिक चेतना के प्रति जागरूकता पैदा करने का अध्ययन करना।
* ग्रामीण छात्रों में पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति चेतना का अध्ययन करना।
* शहरी छात्रों का पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति चेतना का अध्ययन करना।
* ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों में वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति चेतना का अध्ययन करना।
* शहरी क्षेत्र के छात्रों में वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति चेतना का अध्ययन करना।

परिकल्पना :

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित शून्य परिकल्पना निर्धारित की गई है।

1. उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी और ग्रामीण छात्रों में पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति चेतना पायी जाती है
2. उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी छात्राओं के बीच पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं शहरी छात्राओं के बीच पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के बीच पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन का महत्व :

प्रस्तुत शोध में 'उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में पर्यावरणीय सामाजिक चेतना की जानकारी को एकत्र करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया गया और साथ-साथ पर्यावरण के प्रति लोगों में स्वच्छता और जागरूकता को बनाए रखने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों की भूमिका को सराहा गया जिससे छात्र पर्यावरण तथा वन संरक्षण के लिए चलाए जाने वाले कार्यक्रमों में उत्साह के साथ अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकें। और अपना संपूर्ण योगदान पर्यावरण के क्षेत्र में दे सकें जिससे पर्यावरण के क्षेत्र में बहुमुखी विकास हो सके और पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सके।

तकनीकी शब्दों की व्याख्या :

1. पर्यावरण:

पर्यावरण शब्द परि+आवरण से मिलकर बना है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है 'चारों ओर से घिरा' हुआ, अर्थात हमारे चारों ओर जो घेरा दिखाई पड़ता है उसे हम पर्यावरण कहते हैं।

2. पर्यावरण शिक्षा :

ऐसी शिक्षा जिसके माध्यम से लोगों को सही राह दिखाई जाए सके जिससे लोगों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता, समझ, जागरूकता, सकारात्मक सोच तथा उसके प्रति विचारों में परिवर्तन लाया जा सके पर्यावरण शिक्षा कहलाती है।

3. वन संरक्षण :

वन संरक्षण अर्थात वनों का संरक्षण करना, वनो का प्रयोग विवेकपूर्ण के साथ करना, वन वृद्धि में सहयोग करना, वनों का विनाश होने से रोकना ही वन संरक्षण का प्रमुख उद्देश्य होता है। वनों के अभाव में पर्यावरण का असंतुलन होना स्वाभाविक है। अतः वन संपदा हमारी अमूल्य धरोहर है और हमें इसे नष्ट नहीं होने देना है।

4. सामाजिक चेतना:

पर्यावरण के प्रति सोचने समझने की क्षमता का विकसित होना ही सामाजिक चेतना है। इसके माध्यम से समाज में विद्यमान पर्यावरणीय कारणों का पता लगाना तथा उसका निदान करना संभव होता है।

अनुसंधान की विधि :

शोधार्थिनी द्वारा इस शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त चर :

अध्ययन में प्रयुक्त चर दो प्रकार के हैं।

* स्वतंत्र चर और

** आश्रित चर

स्वतंत्र चर के अंतर्गत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं को लिया गया है जबकि आश्रित चर के अंतर्गत पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों को सम्मिलित किया गया है।

प्रदत्तो के स्रोत :

शोध अध्ययन के स्रोत दो प्रकार के हैं।

* प्राथमिक स्रोत

** द्वितीयक स्रोत

प्राथमिक स्रोत के अंतर्गत उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र छात्राओं को सम्मिलित किया गया है और द्वितीयक स्रोत के अंतर्गत किताबें,पत्र पत्रिकाएं, जनरल आदि को सम्मिलित किया गया है।

प्रदत्तो की प्रकृति :

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तो की प्रकृति गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों है।

प्रस्तुत शोध का सीमांकन :

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु शोधार्थिनी द्वारा निम्नलिखित सीमांकन किया गया है।

1. प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन हेतु प्रयागराज जिले के उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के 8 विद्यालयों का चयन किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध पत्र हेतु अध्ययन में केवल उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 12 के छात्र छात्राओं को ही सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध पत्र हेतु उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन में 240 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया है जिसमें 120 छात्र और 120 छात्राएं सम्मिलित है।

जनसंख्या :

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं का चयन किया गया है। जिसमें कुल 240 छात्र छात्राओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया गया इसमें 120 छात्र और 120 छात्राएं सम्मिलित है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध पत्र के लिए प्रयागराज जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 12 के 240 विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।

क्षेत्र	छात्र की सख्यां	छात्राओं की सख्यां	कुछ सख्यां
ग्रामीण विद्यालय के छात्र-छात्रायें	60	60	120
शहरी विद्यालयों के छात्र-छात्रायें	60	60	120

अध्ययन के उपकरण:

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शोधार्थिनी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त साख्यिकी विधियां :

शोध अध्ययन हेतु प्रयुक्त साख्यिकी विधियां निम्नलिखित है।

1. **मध्यमान :** मध्यमान साधारण औसत होती है मध्यमान किसी समूह के प्राप्ताकों में योगफल को उन अंकों की संख्या से भाग देने से जो भागफल प्राप्त होता है उसे मध्यमान कहते हैं।

2. **प्रमाणिक विचलन :** दिए गए प्राप्ताकों के मध्यमान से प्राप्ताकों के विचलन के वर्गों में मध्यमान का वर्गमूल ही प्रमाणिक विचलन कहलाता है।

3. **टी परीक्षण :** अनुसंधान कार्य के अंतर्गत जब केवल 2 समूहों की तुलना करना हो तो जिस साख्यिकीय विधि का प्रयोग किया जाता है उसे टी-परीक्षण कहते हैं। टी- परीक्षण का प्रयोग करने हेतु एक स्वतंत्र चर को केवल 2 स्तरों में विभाजित किया जा सकता है।

शोध के परिणाम और निष्कर्ष :

परीक्षण से प्राप्त आंकड़ों का साख्यिकी विधि से प्रयोग करके निम्नलिखित निष्कर्ष को प्राप्त किया गया है।

1. **परिकल्पना नं.एक,** 'उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी और ग्रामीण छात्रों में पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति चेतना पायी जाती है'।

सारिणी में उल्लेखित निष्कर्षो के आधार पर हम कह सकते हैं कि ग्रामीण और शहरी छात्र-छात्राओं में पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक चेतना पायी जाती है जिसका कारण दोनों समूहों की पर्यावरण व वन संरक्षण कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता रही होगी। अतः परिकल्पना एक स्वीकृत की जाती है।

2. **परिकल्पना नं.दो,** 'उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारिणी में उल्लेखित निष्कर्षों के आधार पर हम कह सकते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक चेतना में सार्थक अंतर नहीं है, जिसका कारण ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के छात्रों की पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता रही होगी। अतः यह परिकल्पना स्वीकृति जाती है।

3. **परिकल्पना नं. तीन,** ' उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी छात्राओं के बीच पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारिणी में उल्लेखित निष्कर्षो के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी छात्राओं के बीच पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक चेतना में सार्थक अंतर नहीं है। जिसका कारण विद्यालय में आयोजित होने वाले पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों में छात्राओं की सक्रिय सहभागिता रही होगी। अतः यह परिकल्पना भी स्वीकृत की जाती है।

4. **परिकल्पना नं. चार,** 'उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं शहरी छात्राओं के बीच पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारिणी में उल्लेखित निष्कर्षो के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र तथा शहरी छात्राओं के बीच पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक चेतना में सार्थक अंतर नहीं है। जिसका कारण पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों में छात्र-छात्राओं का सक्रिय सहभागिता रही होगी। अतः यह परिकल्पना भी स्वीकृत जाती है।

5. **परिकल्पना नं. पांच,** ' उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के बीच पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारिणी में उल्लेखित निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र और ग्रामीण छात्राओं के बीच पर्यावरण और वन संरक्षण कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक चेतना में सार्थक अंतर नहीं है। जिसका कारण उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालयों में आयोजित होने वाले पर्यावरणीय कार्यक्रमों और वन संरक्षण कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता रही होगी। अतः यह परिकल्पना भी स्वीकृत की जाती है।

शैक्षिक निहितार्थ :

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ हो सकते हैं।

*अध्यापकों को पर्यावरण के विषय पर समय-समय पर नवीन जानकारियों से अवगत होना चाहिए जिससे वे छात्र-छात्राओं को पर्यावरण के महत्व और उपयोगिता के विषय में बताकर उनमें सामाजिक चेतना को उत्पन्न कर सकें।

* पर्यावरण संबंधित कार्यक्रमों जैसे नुक्कड़ नाटक, रैलियां निकालना, सभाओं का आयोजन करना, वृक्षारोपण का कार्यक्रम करना आदि के द्वारा वन संरक्षण के विषय में छात्रों को अवगत कराना चाहिए।

* सरकारों द्वारा राज्य स्तर पर पर्यावरण संबंधित कार्यक्रमों द्वारा चेतना पैदा करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

* छात्रों द्वारा स्वयं कोई ना कोई पर्यावरण संबंधित कार्यक्रम चलाकर समाज में सामाजिक चेतना का विकास करना चाहिए।

* सरकारों को पर्यावरण संरक्षण के लिए दुरदर्शन, टी.वी.चैनलों का प्रयोग करके समाज मे चेतना का विकास करना चाहिए।

* सरकार द्वारा पर्यावरण तथा वन संरक्षण के लिए स्कूलों में पौधों का निशुल्क वितरण करवाना चाहिए जिससे छात्रों द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सके।

* सरकार द्वारा पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य विषय के रूप में पाठ्यक्रम में शामिल कर देना चाहिए इसके लिए स्नातक, परास्नातक तथा पर्यावरण शिक्षा में डिप्लोमा जैसे कोर्सों की व्यवस्था करनी चाहिए।

* सरकार द्वारा पर्यावरण शिक्षा के लिए प्रशिक्षित अध्यापकों की नियुक्ति की जानी चाहिए जिसके लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी होगी।

* सरकार द्वारा पर्यावरण के क्षेत्र में नवीन खोजों के लिए शोध कार्यो को प्रोत्साहित करना चाहिए जिसके लिए शोधार्थियों को शोध कार्यो हेतु वित्तीय सहायता की मदद करनी चाहिए।

* आधुनिक समाज द्वारा पुरानी परंपराओं को त्याग करके नवीन आधुनिक धारणाओं को स्वीकार करना चाहिए।

* समाज के लोगों में स्वयं पर्यावरण के प्रति चेतना की भावना का विकास करना चाहिए।

* पर्यावरण तथा वन संरक्षण कार्यक्रमों में समाज के लोगों द्वारा सक्रिय भाग लेना चाहिए तथा वित्तीय सहायता देनी चाहिए।

* छात्रों में पर्यावरण के प्रति चेतना पैदा हो इसके लिए मनोरंजन और ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।

आगामी शोध हेतु सुझाव :

शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न स्तरों पर छात्रों में आज के वैज्ञानिकता के युग में पर्यावरण के प्रति जागरूकता या चेतना है कि नही, इसके विषय में जानने के लिए अभी अध्ययन की आवश्यकता है। इस शोध पत्र के द्वारा इस समस्या का समाधान निकालना पूर्णतः कठिन है। अतः इसके साथ-साथ पर्यावरण के क्षेत्र में सामाजिक चेतना पर शोध कार्य किए जाने की आवश्यकता है जिसके निम्नलिखित निम्न प्रकार हो सकते हैं।

1. पर्यावरण अध्ययन विभिन्न महानगरों के बीच किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत अध्ययन केवल ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को लेकर भी किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत अध्ययन अध्यापकों (शहरी एवं ग्रामीण) पर किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत अध्ययन समाज के विभिन्न वर्गों के बीच भी किया जा सकता है।
5. प्रस्तुत अध्ययन समाज के गरीब तथा अमीर वर्गों के बीच किया जा सकता है।
6. प्रस्तुत अध्ययन पुरुष तथा स्त्री के बीच प्रर्यावरण जागरूकता को लेकर किया जा सकता है।
7. प्रस्तुत अध्ययन हिंदी मीडियम और अंग्रेजी मीडियम के छात्रों के बीच सामाजिक चेतना को लेकर किया जा सकता है।
8. प्रस्तुत अध्ययन सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों को लेकर किया जा सकता है।
9. प्रस्तुत अध्ययन परास्नातक वर्ग में विज्ञान वर्ग और कला वर्ग के छात्रों में पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन के रूप में किया जा सकता है।

संदर्भ :

1. पर्यावरण और वन मंत्रालय:"शिक्षा और जागरूकता", नई दिल्ली: वार्षिक रिपोर्ट, 2006- 07.
2. मीनोल, जे.यल. और ए.जे.माकस: 'किशोरों का पर्यावरणीय व्यवहार क्या ज्ञान' पर्यावरण और व्यवहार, वॉल्यूम, 37, अंक 4, 2005 .
3. खान, एस.एच., "वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच कुछ चर के संबंध में पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन", अंतर्राष्ट्रीय वैश्विक अनुसंधान विश्लेषण, वॉल्यूम 2, अंक, 4, 2013 ,
4. शर्मा, एन.के. "सेक्स, ग्रामीण-शहरी पृष्ठभूमि और शैक्षणिक के संबंध में कॉलेज के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता पर एक अध्ययन, स्ट्रीम वाइज "Journal शिक्षा में नए क्षितिज के ऑनलाइन जर्नल, वॉल्यूम, 4, अंक 2, 2014 .
5. थोटे, पी. "पर्यावरण जागरूकता के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन: एक केस अध्ययन", अनुसंधान निर्देश, वॉल्यूम, 1, अंक 1, 2013 .
6. जे. अरुण कुमार, "शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षक प्रशिक्षुओं के बीच पर्यावरण जागरूकता के मूल्यांकन पर एक अध्ययन", अंतर्राष्ट्रीय जर्नल सामाजिक विज्ञान में शोध, खंड, 2, अंक 3,, 2012 .
7. गुप्ता, ए. "पर्यावरण शिक्षा के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण, नेहरू मेमोरियल जूनियर कॉलेज" (S.I.E.M.M-महाराष्ट्र.वित्तपोषित), 1986 .
8. साहा, ए.के. "पर्यावरण, सामाजिक वानिकी और सामुदायिक जागरूकता", कुरुक्षेत्र जर्नल ऑन रूरल डेवलपमेंट, I & B, मंत्रालय मंत्रालय .
9. भारती, ए. "वाराणसी के उच्च माध्यमिक छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच संबंध का एक अध्ययन ", बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, 2002.
10. महाजन,पी. और एन. दरबारी, "मानक और लिंग के संबंध में स्कूली छात्रों की पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड इंफॉर्मेशन स्टडीज, वॉल्यूम,4, अंक 1, 2014 .
11. कुमार, एस. और एम०एस०, पाटिल, "छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर पर्यावरण शिक्षा का प्रभाव": एडट्रैक, वॉल्यूम, 6, अंक 8, 2007 .